वैदिक सृष्टि प्रक्रिया

प्रो० सन्तोष कुमार शुक्ल
डॉ० लक्ष्मीकान्त विमल
डॉ० मणि शंकर द्विवेदी

तेजस्वि नावधीतमस्तु
श्रीशंकर शिक्षायतन

ITEM CODE:	HAJ742
AUTHOR:	SANTOSH KUMAR SHUKLA, DR. LAKSHMIKANT VIMAL, MANI SHANKAR DWIVEDI
PUBLISHER:	VIDYANIDHI PRAKASHAN, DELHI
LANGUAGE:	SANSKRIT TEXT WITH HINDI TRANSLATION
EDITION:	2023
ISBN:	9788196502201
PAGES:	291
COVER:	HARDCOVER
OTHER DETAILS	21.5 CM X 14 CM

विषयानुक्रमणिका

	सम्पादकीय	*(v)*
	संकेताक्षरसूची	*(ix)*
1.	वैदिकविज्ञान : संशयतदुच्छेदवाद का विश्लेषण — *प्रो० सन्तोष कुमार शुक्ल*	1
2.	सृष्टि का मूल : आभु एवं अभ्व — *प्रो० पीयूषकान्त दीक्षित*	13
3.	आत्मा की आनन्दरूपता — *प्रो० रामानुज उपाध्याय*	23
4.	आभु-अभ्व तत्त्व विमर्श — *डॉ० सुन्दर नारायण झा*	30
5.	ब्रह्म एवं प्रकृति वाचक तत्त्वों का विवेचन — *प्रो० प्रभाकर प्रसाद*	44
6.	जीव और ईश्वर विमर्श — *प्रो० महानन्द झा*	48
7.	उपासनावाद विचार — *प्रो० विष्णुपद महापात्र*	53
8.	उपासना-विमर्श: — *डॉ० दयालसिंह पँवार*	61
9.	भय की स्वरूप मीमांसा — *प्रो० अजय कुमार झा*	66
10.	उपासना तत्त्व — *प्रो० सुजाता त्रिपाठी*	71
11.	ईश्वरतत्त्वम् — *डॉ० रामचन्द्र शर्मा*	76

10

उपासना तत्त्व

प्रो० सुजाता त्रिपाठी*

विद्यावाचस्पति पं० मधुसूदन जी ओझा द्वारा प्रणीत संशयतदुच्छेदवाद ग्रन्थ तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम काण्ड विज्ञानोपक्रमाधिकार से अभिहित है। द्वितीय काण्ड संशयाधिकार नाम से है तथा तृतीय काण्ड संशयतदुच्छेदवाद दो पर्वों में विभक्त है। प्रथम पर्व में क्रमशः सर्वासत्यवादप्रतिवाद, अप्रमाण्यवादप्रतिवाद, जीवजगत् संशयवादप्रतिवाद, ईश्वरजगत् संशयवादप्रतिवाद तथा परिशिष्टवाद नामक पाँच खण्डों के अन्तर्गत अनेकानेक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विषयों का विवेचन किया गया है। ईश्वरैकसत्योपनिषत् नामक द्वितीय पर्व में भी अनेक प्रकरणों के माध्यम से जगत्–जीव–ईश्वर आदि का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

तीनों काण्डों पर पं० ओझा जी के प्रधान शिष्य वेदवाचस्पति पं० मोतीलाल शास्त्री जी ने हिन्दी विज्ञानभाष्य द्वारा पाठकों के लिए जटिल विषय का सरलीकरण कर उसे सुगम बना दिया।

प्रथम पर्व के पञ्चम खण्ड में 'उपासनावाद' प्रकरण के अन्तर्गत पं० ओझा जी ने उपासना उपक्रम का विश्लेषण कर मनुष्य के जीवन की सार्थकता का परिचय दिया है।

'भगवत् समीपमास्यते इति उपास्यते। उपास्यते अनेन इति उपासना'। भगवद् भक्ति रूप उपासना ही उपासकों को भगवत्प्राप्ति कराने में सद्यः सिद्धि प्रदान करने वाला सहज उपाय है। शरीर, बुद्धि और हृदय ये उपासना के माध्यम हैं। शरीर कर्म करने का माध्यम है और बुद्धि और हृदय कर्म की सम्पन्नता में सहायक होते हैं। हृदय रहित कर्म भ्रान्त और नीरस होता है। ज्ञानरहित कर्म तत्त्वविहीन होता है। हृदय का बुद्धि और कर्म दोनों पर नियन्त्रण होता है। सहृदय व्यक्ति का कर्म भी उत्तम होता है